कहानी सुनाने के माध्यम से भाषा का विकास

गीता रामानुजम

हर व्यक्ति जब भी किसी अनुभव का वर्णन करना, कोई किस्सा सुनाना या फिर कोई ख़बर सुनाना शुरू करता है, तब वह कहानीकार हो जाता है। और वही कहानीकार टेलीविज़न, रेडियो या फिर किसी पारिवारिक सदस्य की बात सुनते वक्त श्रोता हो जाता है। इस दुनिया में सारा संवाद कहानियों के इर्द-गिर्द ही विकसित होता और घूमता है। सूचना बोर्डों से लेकर, बस अड्डे, रेलवे स्टेशन, सिनेमाघर, घर, स्कूल, कॉलेज, रास्ते, सड़क, विज्ञापन, परिवार, कार्यस्थल और यहाँ तक कि अन्तरिक्ष में कहानियाँ हर जगह होती हैं। जब हम अपने अनुभव और यादें अपने परिवार या मित्रों के साथ बाँटते हैं, तो वे कहानियों से भरी होती हैं।

इसलिए, स्वाभाविक रूप से इन कहानियों को संवाद के माध्यम से एक-दूसरे के साथ बाँटना लाज़मी हो जाता है।

संवाद करने में भाषा महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। कहानी कहने की भाषा में सुनने, याद रखने और स्मृति से वापिस निकालने तथा सुनने के बाद पुनः कहने के कौशल शामिल होते हैं जो सम्प्रेषण की मौखिक परम्परा का आधार तैयार करते हैं। भाषा के विकास के चारों बुनियादी स्तम्भ - सुनना और बोलना, पढ़ना और लिखना - हमें कहानियों के ख़जाने के सन्दूक में मिलते हैं।

कहानियाँ बच्चे के मन में अचरज का भाव पैदा करती हैं जिसके चलते बहुत ही छोटी उम्र से उसकी कल्पनाशीलता जागने लगती है। एक तरह से हमारे घर के आँगन में ही प्रत्येक संस्कृति की लोककथाओं का उत्कृष्ट गुप्त ख़जाना दबा हुआ है। हम इस ख़जाने को बाहर लाएँ और इसे बच्चों में वापस सहेज दें, ताकि वे कहानी के किरदारों को जानें, महसूस करें और कहने वाले की ध्वनियों को ध्यान से सुन सकें।

ध्वनि और भाषा का विकास

ध्वनियाँ क्या हैं? परमाण्विक विज्ञान और आइंस्टीन के सिद्धान्त ने यह निष्कर्ष प्रतिपादित किया है कि परमाणु के स्तर पर सभी पदार्थ समान होते हैं। वस्तुएँ हमारी आँखों को भिन्न-भिन्न प्रतीत होती हैं क्योंकि उनमें विभिन्न बिन्दुओं पर ऊर्जा अलग-अलग आवृत्तियों के कम्पन पैदा करती है।

कम्पन से ध्वनि पैदा होती है। सबसे प्रारम्भिक कम्पन संतों व ऋषियों द्वारा महसूस किए गए थे जिन्हें इसका ज्ञान हुआ और फिर उन लोगों ने इसे श्रुति कहा अर्थात् जिसे सुना जाता

है। सामगायन और वेदों की परम्परा बिना किन्हीं लिखित दस्तावेजों के एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचती रही। न तो उनके पास इनके लेखक होने का दावा है और न ही कोई स्वत्वाधिकार। फिर भी यह परम्परा आज भी गुरु-शिष्य परम्परा में सुनकर सीखने (इसे स्तोत्र कहा जाता है) के प्राचीन तरीक़े के माध्यम से जारी है।

इन्हें लिखा क्यों नहीं गया? कुछ लोगों का कहना है कि कुछ ध्वनियाँ ऐसी होती हैं कि उन्हें ध्वनिचिन्हों द्वारा ठीक-ठीक नहीं लिखा जा सकता। वे दो शब्दांशों के बीच में पड़ती हैं और वेदों में इस तरह की कई ध्वनियाँ हैं। हमारी भावनात्मक प्रतिक्रिया से लेकर प्रकृति की नियमितता को नियंत्रित करनेवाली वैश्विक शक्ति तक सभी कुछ स्वरों में होने वाले अन्तरों से परिवर्तित हो जाता है।

ध्वनि-परिवर्तन से किस तरह विपरीत प्रभाव पैदा हो सकते हैं, इसे वेदों की तैत्रेयी संहिता में एक लघुकथा के रूप में बताया गया है। त्वश्त नामक स्वर्ग के कारीगर ने एक मंत्र सीखा जिसके द्वारा वह इन्द्र का नाश कर सकने वाला पुत्र पैदा कर सकता था। मंत्र का जाप करते समय उसने शब्दों की ध्वनियों के स्वरोच्चारण और उतार-चढ़ाव में गड़बड़ कर दी। इसके परिणामस्वरूप उसके आशय के ठीक विपरीत पुत्र की उत्पत्ति हुई। इन्द्र का विनाश करने वाले पुत्र की माँग करने के बजाय उसने इन्द्र के हाथों मारे जाने वाले पुत्र की माँग कर दी। कहानी आगे बताती है कि आख़िर रकार ऐसा ही हुआ।

भाषा सही ढंग से बोले गए और समुचित प्रभाव के साथ सम्प्रेषित किए गए शब्दों का सिलसिला होती है। किसी एहसास या किसी भाव या फिर किसी वस्तु के आशय को निर्धारित करने वाले शब्द प्रभावशाली ढंग से केवल तभी सम्प्रेषित किए जा सकते हैं जब वे सही स्वर, भाव व लहजे के साथ बोले गए हों।

जिस तरह संगीत में अच्छा-खासा अनुभव रखने वाला कोई व्यक्ति गलत सुर को तुरन्त ही पहचान जाता है, उसी तरह भाषा में पारंगत व्यक्ति बोलने में हुई ग़लती को पहचान सकता है।

जापान के टोक्यो बाल पुस्तकालय में, मुख्य पुस्तकालयाध्यक्ष बच्चों को आज की जापानी भाषा के विपरीत, आहिस्ता व ठहरावों के साथ बोला जाने वाला उसका पुराना रूप सिखाने के लिए कहानियों का सहारा लेते हैं।

यदि आप हमारे रेडियो व टेलीविज़न चैनलों को सुनें, तो अलग-अलग लहजों वाली अँग्रेज़ी के मिश्रण के साथ सभी क्षेत्रीय भाषाएँ एक-सी सुनाई देती हैं। हम एक ऐसी सर्वथा नई अनर्गल भाषा (जिब्रिश) विकसित कर रहे हैं जो न तो वैसी बोली जानेवाली अँग्रेज़ी है जैसी उसे बोला जाना चाहिए, और न ही आधुनिक चालू भाषा, बल्कि एक नई ही भाषा है जिसका कोई मतलब समझ में नहीं आता।

संसार में 1652 से ज़्यादा मातृभाषाएँ, उनकी विविध बोलियों के बोलनेवालों के द्वारा बताए गए उनके नामों सहित दर्ज हैं। भाषाविदों ने अकेले भारत में 105 भाषाओं के अन्तर्गत ऐसी अनेक बोलियों या उपभाषाओं को वर्गीकृत किया है।

शिक्षण के लिए भाषा

शिक्षकों के लिए प्रभावशाली सम्प्रेषक होना ज़रूरी है। भाषा सभी तरह के सम्प्रेषण का आधार होती है। शिक्षकों के लिए यह ज़रूरी है कि वे बच्चों में भावनात्मक तथा बौद्धिक क्षमताओं के संतुलित विकास में सहयोगी बनें। यह तभी सम्भव है जब शिक्षक कक्षा में बच्चों तक अपनी बात प्रभावशाली ढंग से सम्प्रेषित करें।

हालाँकि हम एक स्कूली दिन को अलग-अलग विषयों के कालखण्डों (पीरियडों) में विभाजित करते हैं, पर भाषा के कौशलों का इस्तेमाल तो दिनभर ही चलता रहता है। ग्रहण करने वाले कौशल होते हैं, सुनना व पढ़ना। जबकि दूसरों से अपनी बात साझा करने वाले कौशल हैं बोलना व लिखना। बोलने को अगर सुनने के साथ न जोड़ा जाए तो फिर उसका कोई प्रयोजन नहीं रहता। सुनने के लिए बीच में विरामक्षणों की ज़रूरत होती है। अँग्रेज़ी के "लिसिन (सुनना)" शब्द में तो "साइलैंट (मौन)" शब्द ही छुपा हुआ है। सुनने के करीब 40 अलग-अलग प्रकार हैं, और यह समझने की ज़रूरत है कि शरीर, मन और आत्मा के साथ देखना व सुनना क्या होता है।

दूसरों की संगत में होने का अर्थ है उनके साथ किसी पारस्परिक समझ या भावना को बाँटना और विचारों का खुले ढंग से आदान-प्रदान करना। कहानियाँ इसके लिए आधार तैयार करती हैं। किसी कहानी में आने वाले नदी, बन्दर या चॉकलेट जैसे शब्द हममें से प्रत्येक के मन में विभिन्न छवियाँ पैदा करते हैं।

पढ़ाना सिर्फ बताना नहीं होता। कहानी कहने की कला में अलग-अलग तरह के सम्प्रेषण शामिल रहते हैं। जैसे कुछ दिखाना, किसी बात के बारे में 'कैसे' और 'क्यों' दर्शाना, अचरज का भाव जगाना, शब्दों को स्वरों के उतार-चढ़ावों के साथ इस तरह सजाना जिससे बच्चे का मन कल्पना की उड़ान भरने लगे व उसके भीतर एक विचारप्रक्रिया का जन्म हो।

एक मर्तबा प्राथमिक स्तर पर ये चीज़ें स्थापित हो जाएँ तो बच्चे के लिए बोलना व पढ़ना जीवनभर के लिए बहुत आसान हो जाएगा और वह खुद को स्पष्ट ढंग से, आत्मविश्वास और सहजता के साथ व्यक्त कर सकेगा।

"जबानी कहानियों" का किसी बच्चे का उसके आसपास की परिस्थितियों व विषयों के प्रति प्रतिक्रिया करने की क्षमता पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ सकता है।

इसकी शुरूआत कैसे की जाए?

कहानी कहनेवाला बनने के लिए ज़रूरी है कि पहले आप "कहानी के अच्छे श्रोता हों।" कहानी कहने वालों को सुनें; उनकी भाषा, स्वरशैली और स्वरों पर दिए जाने वाले बल, वाक्य संरचना, ठहरावों और प्रवाह पर ध्यान दें। अपने आसपास के लोगों की छवियों, भाषा व तौर-तरीकों को ध्यान से देखें।

एक सफल कथावाचक बनने के लिए ज़रूरी है कि आप कहानियाँ सुनाते रहें। जैसे-जैसे आपका आत्मविश्वास व रुचि बढ़ेगी, वैसे-वैसे आप और कहानियाँ एकत्रित करते जाएँगे। कुछ को रिकॉर्ड कर लेंगे और जब चाहें तब उन्हें स्मरण कर सकेंगे।

खुद अपनी कहानियाँ सुनने के लिए भी समय निकालें। वह किरदार बनें जो आप भीतर से हैं। उसे बढ़ाचढ़ा कर देखने की कोशिश करें। कोई ऐसा किरदार भी बनाएँ जो आप नहीं हों। कहानी के किसी पात्र के साथ तादात्म्य बनाएँ। यह सब तभी सम्भव है जब आप कहानी कहने को गणित, विज्ञान, भूगोल या इतिहास की तरह न देख रहे हों। यह कोई ऐसा विषय नहीं है जिसे दिमाग से सीख लिया जाए या याद कर लिया जाए। इसके रहस्य आपको इतनी आसानी से मालूम नहीं चल सकते। "ठहरो, इन्तजार करो और देखो।" यह प्रक्रिया स्वतः आपके सोचने के कौशलों में एक बदलाव ले आएगी। अपने दोस्तों तथा बच्चों की बात सुनते समय ध्यानपूर्वक उत्सुक रहें। अपना सिर हिलाकर या फिर 'हूँ', 'अच्छा', आदि कहकर उन्हें यह भरोसा दिलाएँ कि आप पूरे दिल से उन्हें सुन रहे हैं। जब आप एक अच्छे कथा-श्रोता बन जाएँ, तो उसकी बुनियाद पर फिर शायद आप एक अच्छे कहानी कहनेवाले बनने के बारे में सोच सकते हैं।

कक्षा में कहानी सुनाने का क्या प्रयोजन होता है?

कहानी कहने से कक्षा जीवन्त हो उठती है और बच्चों के लिए अवधारणाओं को समझना कहीं ज़्यादा आसान हो जाता है। बच्चों को आमतौर पर जिस चीज़ को समझने में पाँच पीरियड लग जाते हैं, वही चीज़ उन्हें कहानी की मदद से समझाए जाने या बताए जाने पर वे उसे सिर्फ एक या दो पीरियड में ही समझ सकते हैं। ज़्यादा महत्त्वपूर्ण बात यह है कि जब बच्चे आपको सुनते हैं तो वे आपके शब्दों, भाषा, लहजे को और, अनजाने में ही, आपके उच्चारण और स्वरभंगिमा (टोन) को पकड़ लेते हैं।

जब बच्चे पूरे दिल से पिरामिडों की लम्बाइयों-चौड़ाइयों के बारे में कोई कहानी सुनते हैं या फिर इतिहास के किसी किस्से को कहानी के माध्यम से सुनते हैं तो उनका समग्र व्यक्तित्व/रोम-रोम सचेत हो जाता है।

कहानियाँ कहने के लिए कौन-से उपकरणों की ज़रूरत होती है?

सर्वश्रेष्ठ उपकरण तो हम खुद होते हैं। हमारा अपना आत्मविश्वास कहानियाँ कहने के लिए सही वातावरण बनाता है। हमें खुद कहानियों में भरोसा होना चाहिए तभी वह भरोसा हम बच्चों में भी पैदा कर पाएँगे।

एक बार की बात है, दो लोग किसी गिरगिट के बारे में बहस कर रहे थे। जहाँ एक का कहना था कि गिरगिट का रंग नीला था, वहीं दूसरा कह रहा था कि उसका रंग भूरा था। अतः वे दोनों अपने एक मित्र के पास गए जो कि जंगल में कई साल से रह रहा था।

उसने कहा कि वे दोनों ही ग़लत थे और यह भी कहा कि "गिरगिट काला होता है और वह मेरे बक्से में बन्द है।" जब उसने अपना बक्सा खोला तो गिरगिट सफेद रंग का निकला। अतः उनमें से कोई भी सही नहीं था, पर वे सभी सही थे। इसी तरह कहानी कहने में, कुछ कहानियाँ सच हो सकती हैं, कुछ मनगढंत, पर वे सभी कहानियाँ होती हैं।

'ब्रह्मांड कहानियों से बना हुआ है, न कि परमाणुओं से', एक महान दार्शनिक ने कहा था।

तो, एक बार हमें किसी कहानी में भरोसा हो जाए, तो वह कहानी स्वतः ही उन भावनाओं के साथ बच्चों तक प्रेषित हो जाती है जिन्हें हम उस कहानी में जोड़ते हैं। ठीक उसी तरह जिस तरह खाना बनाते वक़्त हम उसमें मसाले डालते हैं जिससे फिर स्वादिष्ट व्यंजन तैयार हो जाता है।

कहानी कहने के हमारे बुनियादी उपकरण हैं:

- शारीरिक भाषा
- भाव भंगिमाएँ
- आवाज़
- तौर-तरीक़े
- शब्द-क्रीड़ा
- प्रवाहमय भाषा
- शब्दावली
- सामान्य ज्ञान
- स्थिति के हिसाब से तुरन्त निर्णय लेना

अतः किसी कहानी को कहने में निपुणता हासिल करने से पहले हमारे लिए उसे कई बार पढ़ना बेहद ज़रूरी है।

"एक समय कहीं एक कौआ रहा करता था", पढ़ने में बहुत आसान है। लेकिन कहते वक़्त इसे कुछ अलग अन्दाज में कहा जाना चाहिए। क्योंकि जब आप कोई कहानी सुनाना प्रारम्भ करते हैं तो उसे सही ध्वनियों व स्वरों के उतारचढ़ाव के साथ बहुत सहजता व स्पष्टता से कहा जाना चाहिए।

इसमें निपुणता हासिल करने के लिए ज़रूरी है कि :

- श्रोताओं के अनुकूल कहानी चुनें। सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ वही होती हैं जिनसे आप परिचित होते हैं और जिन्हें आप कक्षाओं में इस्तेमाल करने से पहले अपने परिवार या साथियों को सुना चुके हों।
- कहानी का वर्णन प्रभावशाली ढंग से करना सीखें।
- इसका कई बार अभ्यास करें।
- ध्यान रखें कि कहानी की शुरुआत व अन्त बढ़िया हों।
- यह सुनिश्चित कर लें कि कहानी के किरदार बहुत स्पष्टता के साथ सामने आएँ।
- अपनी कहानी का समय-निर्धारण करें।
- कहानी को पढ़ें।
- फिर उसे कई बार ज़ोर से दोहराएँ।
- कहानी को सुनाएँ।
- उसे ज़ोर से पुनः सुनाएँ।
- भाव-भंगिमाओं, शारीरिक क्रियाओं, तथा स्वरों का अभ्यास करें।
- कहानी को अपनी बनाकर प्रस्तुत करें।
- अब इसे एक अन्तिम निखार दें।

अब आप अपनी कहानी कहने के लिए तैयार हैं...

'ब्रह्मांड कहानियों से बना है, न कि परमाणुओं से...'

गीता रामानुजम कहानीकार हैं, अकादमिक विद्वान हैं और भारत तथा दुनिया भर के कई शैक्षणिक कार्यक्रमों की सलाहकार भी हैं। उन्हें अशोका फैलोशिप मिल चुकी है। उन्होंने अब तक 49,000 से ज़्यादा शिक्षकों को प्रशिक्षित किया है। वे इन्टीग्रेटिंग स्टोरीटैलिंग विथ ऐजुकेशन (कहानी कहने को शिक्षा के साथ जोड़ने) तथा कहानी कहने को कला का रूप देने के क्षेत्रों में एक सफल उपक्रमी रही हैं। एकेडमी ऑफ स्टोरीटैलिंग, संस्था को विकसित करने में उनकी अहम भूमिका रही है। भारत में यह अपनी तरह की पहली संस्था है जो कहानी कहने की कला में प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम चलाती है। गीता के लिए कहानी कहना एक आध्यात्मिक व धार्मिक यात्रा है। किसी कार्यशाला में उन्हें सबसे ज़्यादा ख़ुशी इस बात से मिलती है कि उनकी कहानी ने प्रतिभागियों की भावनाओं को किसी-न-किसी प्रकार से छुआ है। उनसे geetastory@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है।

यह *Learning Curve, Issue XIII (Language Learning)* अक्टूबर, 2009 में प्रकाशित लेख Language Development through Story-telling का हिन्दी अनुवाद है।

अनुवाद : भरत त्रिपाठी **पुनरीक्षण एवं सम्पादन :** राजेश उत्साही